सीकर जिले में पर्यटन विकास एवं संभावनाएं

हंसराज काजला

सारांश

पर्यटन का तात्पर्य जिज्ञासु मानव द्वारा मनोरंजन के उद्धेश्य से एक स्थान से दूसरे स्थान पर अल्पकालीन भ्रमण से है। वर्तमान में पर्यटन उधोग विश्वभर में तेजी से प्रगतिशील व अल्प निवेश में अधिक लाभ प्रदान करने वाला उधोग है। इसलिए विश्वभर के विभिन्न देश पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करने हेतु पर्यटन स्थल विकास नये पर्यटन स्थलों की खोज पारिस्थितिक पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, पर्यटन सुरक्षा आदि पर बल दे रहे हैं।

भारत की कला एवं संस्कृति, धार्मिक ऐतिहासिक, पारिस्थितिकी, स्थल विश्वभर के पर्यटकों को अत्यन्त लुभाते हैं। इसी प्रकार भारत के पर्यटन गन्तव्यों में राजस्थान का विशेष महत्व है। वीरों की भूमि राजस्थान अपने शौर्य , इतिहास, स्थापत्य, दुर्ग, किले, महल, हवेलियां प्राकृतिक सौन्दर्य, लोक कला, संस्कृति ,आतिथ्य सत्कार द्वारा पर्यटकों का मन मोह लेती है। ऐसी पावन धरा का एक भाग सीकर जिला धार्मिक ऐतिहासिक स्थल, हवेलियां भित्ति चित्र व सास्कृतिक स्थलों के कारण न केवल देश में बल्कि विश्वभर में प्रसिद्ध है।

प्रस्तुत शोध पत्र में सीकर जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों का वर्णन करते हुए इन पर्यटन स्थलों के विकास में आ रही बाधाओं को उजागर किया गया है। तथा पर्यटन विकास हेतु आवश्यक सुझाव प्रस्तुत किये गये है।

मूल बिन्दु : पर्यटन, पारिस्थितिकी पर्यटन, पर्यटन सुरक्षा, भित्ति चित्र।

परिचय

पर्यटन का तात्पर्य है, जिज्ञासु मानव द्वारा मनोरंजन के उद्देश्य से एक स्थान से दूसरे स्थान का भ्रमण करना। विश्वभर में पर्यटन आज तेजी से उभरता उधोग है जो अल्पनिवेश अधिक विदेशी पूंजी व रोजगार सृजन करता है। विश्व की कुल जी.डी. पी. में 9.8 प्रतिशत भाग पर्यटन का है। प्रत्येक 11 रोजगारों में एक रोजगार पर्यटन से सर्जित होता है। वर्ष 2016 में 1.235 बिलियन अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन हुआ, तथा विश्व पर्यटन संगठन की रिपोर्ट के अनुसार 2030 तक पर्यटन 3.3 प्रतिशत की दर से वृद्धि करेगा। उपर्युक्त तथ्य पर्यटन के महत्व को इंगित करते है।

पर्यटन की दृष्टि से भारत महत्वपूर्ण देश है। यहाँ के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक धार्मिक व प्राकृतिक स्थल विश्वभर के पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करते है। भारत विश्व पर्यटन सूची में 40 वें स्थान पर है, जबकि पर्यटन जी.डी.पी. में भारत 7 वें स्थान पर है। भारत में कुल रोजगार का 5.8 प्रतिशत भाग पर्यटन से सर्जित हुआ। इस प्रकार पर्यटन भारत की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

राजस्थान भारत के पर्यटन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भारत में आने वाला हर तीसरा पर्यटक राजस्थान आता है। राजस्थान के किले, महल, हवेली, वन व धार्मिक स्थल भारत में ही नहीं विश्वभर में विशेष महत्व रखते है।

राजस्थान में पर्यटन के महत्व को समझते हुए; वर्ष 1989 में युनूसखान समिति की सिफारिश पर इसे उधोग का दर्जा प्रदान किया गया। साथ ही पर्यटन विकास हेतु पर्यटन सर्किटों का गठन किया गया। राजस्थान के पर्यटन स्थलों में सीकर जिलें का विशेष महत्व है; यहाँ धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक पर्यटन स्थल विद्यमान हैं जो पर्यटकों का मनमोह लेते है।

सीकर 27° 21′ से 28°12′ उतरी अक्षांश व 74° 44′ से 75°25′ पूर्वी देशान्तर के मध्य राजस्थान के उत्तरी पूर्वी भाग में अवस्थित है। इस जिले का क्षेत्रफल 7732 वर्ग किमी. है। यह राजस्थान के अर्द्धशुष्क प्रदेश में आता हैं, जिसे बांगड क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। कांतली जिले की एकमात्र नदी है जो मौसमी नदी है। जिले से अरावली पर्वत श्रृंखला गुजरती है जो खनिजों के उत्पादन व उत्पादन की संभावनाओं का भण्डार है।

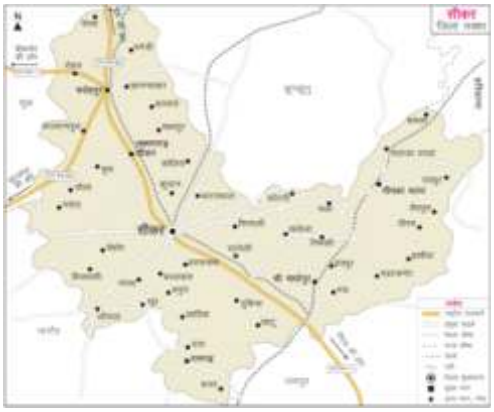

उद्देश्य :–

उपर्युक्त शोध विषय के लिए निम्न लिखित उद्देश्य हैः–

1.सीकर के पर्यटन स्थलों का भौगोलिक विश्लेषण करना।

2.सीकर में पर्यटन विकास को इंगित करते हुए, विकास की संभावनाओं का आंकलन करना।

3.अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन विकास में आ रही बाधाओं का उजागर कर, समाधान प्रस्तुत करना।

शोध विधि :–

उपर्युक्त शोध हेतु आंकडों का संकलन प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकडों के माध्यम से प्राप्त किया गया है। प्राथमिक स्त्रोतों से पर्यटन स्थलों की जानकारी, पर्यटन स्थल पर समस्याओं की जानकारी, पर्यटकों की समस्या आदि का आंकलन किया गया हैं। वहीं द्वितीयक स्त्रोतों के माध्यम से पर्यटन स्थलों की जानकारी, पर्यटन आगमन के आंकडें, पर्यटन विकास कार्य आदि प्राप्त किये गये है।

सीकर जिलें के प्रमुख पर्यटन स्थल :–

1.खाटूश्याम मंदिर :–

यह जिले के दांतारामगढ़ तहसील के खाटू ग्राम में जयपुर से 80 किमी, रींगस से 17 किमी., सीकर से 47 किमी की दूरी पर अवस्थित है। यहाँ प्रतिवर्ष फाल्गुन माह की एकादशी को विशाल मेला लगता है, जहाँ देश भर से लाखों श्रद्धालु दर्शन हेतु आते है।

मंदिर सफेद संगमरमर से बना है, प्रार्थना कक्ष में संगमरमर की सूक्ष्म कलाकारी दर्शनीय है। मंदिर के पास ही श्याम कुण्ड, श्याम बगीची, गौरीशंकर मंदिर भी दर्शनीय है।

2.जीणमाता व हर्षनाथ मंदिर :–

जीणमाता व हर्षनाथ मन्दिर जिले के प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थलों में से एक है। ये जयपुर सीकर राष्ट्रीय राजमार्ग पर हर्षनाथ पर्वत श्रेणी में अवस्थित हैं। जीणमाता चौहान राजवंश की कुलदेवी, साथ ही मीणा जनजाति की अराध्य देवी है, जहाँ प्रतिवर्ष विशाल मेले का आयोजन होता है। हर्षनाथ की पूजा जीणमाता के भाई के रूप में की जाती है, अतः इनका भी विशेष महत्व है। ये मंदिर 10वीं शताब्दी में निर्मित है। वर्षाकाल में यहाँ हरियाली फेल जाती है जो मनोरम दृश्य का निर्माण करती है।

3.गणेश्वर :–

सीकर के नीम का थाना तहसील में स्थित गणेश्वर राजस्थान के प्राचीन पुरातात्विक स्थलों में एक है। यहाँ ताम्रयुगीन सभ्यता के अवशेष विद्यमान है; इन अवशेषों के अलावा यहाँ सल्फर युक्त गर्मपानी का कुण्ड पर्यटकों के आकर्षण का विषय है।

4.लक्ष्मणगढ़ :–

सीकर से 24 किमी की दूरी पर राष्ट्रीयराजमार्ग 11 पर अवस्थित लक्ष्मणगढ कस्बा, लक्ष्मणगढ किला एवं हवेलियों के लिए प्रसिद्ध है। किले का निर्माण 1864 में लक्ष्मणसिंह द्वारा करवाया गया जो भेड़ नामक पहाडी पर अवस्थित हैं एवं हवेलियों में चार चौक हवेली, राठी परिवार हवेली, कयाल हवेली, संगनीरिया हवेली एवं डाकनियों का मंदिर विशेष रूप से दर्शनीय है। यहाँ की हवेलियों के भित्ति चित्र विश्वभर में प्रसिद्ध है।

5.फतेहपुर :–

जयपुर – बीकानेर राष्ट्रीय राजमार्ग पर अवस्थित फतेहपुर हवेलियों, जोजोबा फार्म, किले के लिए प्रसिद्ध है। हवेलियों में जगनाथ सिंघानिया हवेली, गोयनका हवेली, पोद्दार हवेली, केडिया हवेली, दिगम्बर जैन मंदिर, द्वारिकाधीश मंदिर, लक्ष्मीनाथ मंदिर, सरस्वती पुस्तकालय, दोजांटी बालाजी मंदिर हेतु प्रसिद्ध है। हवेलियों में आला–गिला पद्धति से निर्मित चित्र पर्यटकों को विशेष लुभाते है।

6.रामगढ शेखावाटी :–

रामगढ़ राष्ट्रीय राजमार्ग 65 पर सीकर से 74 किमी दूरी पर अवस्थित हैं। यह शहर हवेली भितिचित्र, छतरी, रचनात्मक कब्र एवं स्थानीय हस्तशिल्प के लिए प्रसिद्ध है। हवेलियों में रामगोपाल पोद्दार हवेली, सुरोलिया हवेली, ताराचंद घनश्यामदास हवेली, प्रसिद्ध है। इनके अलावा रामगोपाल पोद्दार छतरी, गंगा मंदिर, शनिदेव मंदिर आदि दर्शनीय स्थल है। यहां भी हवेलियों के भितिचित्र पर्यटकों को विशेषरूप से लुभाते है।

9.शाकम्भरी माता मंदिर :–

यह मंदिर सीकर जिले के सकराय ग्राम में उदयपुर वाटी से 15 किमी की दूरी पर अवस्थित हैं। इस मंदिर का प्राथमिक निर्माण दुर्लभराय चौहान के भतीजे ने करवाया था। वर्तमान स्वरूप सेठ राम गोपाल द्वारा प्रदान किया गया। यह मंदिर लोहार्गल पहाड़ी की तलहटी में स्थित है। वर्षाऋतु में यहाँ का दृश्य अत्यन्त मनोरम होता है। पास में ही कोट बांध, लोहार्गल तीर्थस्थल, चौबिस कोशीय परिक्रमा स्थल विशेष रूप से दर्शनीय है।

उपर्युक्त के अलावा खण्डेला में खंण्डेला धाम जहाँ 37 कुल देवी एवं काल भैरव, गणेश जी मंदिर, चारोडाधाम, दो जांटी बालाजी(फतेहपुर), शिव मन्दिर बालेश्वर (नीम का थाना) ऐसे स्थल हैं, जहाँ पर्यटन विकास की संभावनाऐं विद्यमान है।

राजस्थान एवं सीकर जिलें के पर्यटन का तुलनात्मक अध्ययन :–

देशी पर्यटन

वर्ष	राजस्थान (लाखों में)	सीकर (लाखों में)
2011	271.37	.....
2012	286.11	0.68
2013	302.98	0.83
2014	330.76	10.16
2015	351.87	0.48

स्त्रोत : वार्षिक प्रतिवेदन,पर्यटन विभाग, राजस्थान (2015–16)

विदेशी पर्यटन :–

वर्ष	राजस्थान (लाखों में)	सीकर
2011	13.51	.....
2012	14.51	142
2013	14.37	0
2014	15.25	0
2015	14.75	16

स्त्रोत : वार्षिक प्रतिवेदन, पर्यटन विभाग, राजस्थान (2015–16)

उपर्युक्त आंकडों से स्पष्ट है कि सीकर जिलें में पर्यटन का विकास काफी कम हुआ हैं, क्योंकि जिलें में राजस्थान आने वाले पर्यटकों का काफी कम हिस्सा सीकर आना पंसद करता है। अतः सरकार एवं स्थानीय नागरिकों के सहयोग से इसकी वृद्धि हेतु प्रयास अपेक्षित है।

निष्कर्ष :–

सीकर जिला अपने पर्यटन स्थलों के लिए विश्वभर में जाना जाता है। यहाँ के धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक स्थल एवं हवेलियाँ एवं भितिचित्र पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते है, परन्तु यहाँ के पर्यटन का वह विकास नहीं हुआ, जो अपेक्षित था, क्योंकि यहाँ के पर्यटक स्थलों पर सुविधाओं की कमी पायी गयी है। वस्तुतः पर्यटन स्थलों तक अच्छी सडक की पहुँच की कमी, पर्यटन सुरक्षा फोर्स की कमी, पर्यटन स्थलों पर पेयजल एवं शौचलयों की कमीं, जिले में अच्छे होटल की कमी, हैरिटेज होटलों की कमी पर्यटन स्थल पर आवारा पशुओं का विचरण, प्रशिक्षित पर्यटन गाईडों का अभाव नष्ट होती हवेली एवं हवेली भित्ति चित्र ऐसी समस्याऐं हैं जिनसे पर्यटकों को दो–चार होना पड़ता है। अतः इन समस्यओं का निदान करते हुए, वर्तमान पर्यटन स्थल का विकास व अन्य स्थलों केा पर्यटन को बढाया जा सकता है।

शोधार्थी
भूगोल विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

संदर्भ सूची

1. Saini, S.K., " Geographical Analysis of Tourism in Jaipur City -1993
2. K.K. Sharma, " Tourism and Hospitality", Sarup & Sons Publications, New Delhi-2003.
3. Bijender K. Punia, " Tourism Management : Problems and Prospectus:, APH Publishing Corporation, New Delhi-2008
4. Annual Report 2015-16, Tourism Department Rajasthan.